2

शिक्षकों ने बनायी कहानियाँ

शरद कुमार पांडे*

कहानी सुनाना भी एक कला है। यदि शिक्षक इस कला में पारंगत है तो एक साधारण-सी कहानी को भी सरस बना देता है। इसके विपरीत यदि शिक्षक को कहानी सुनाने की कला की जानकारी नहीं है तो रोचक कहानी भी बच्चों पर अपना प्रभाव नहीं छोड़ पाती है। यही कारण है कि भाषा संबंधी शिक्षक प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रमों के दौरान एक सत्र कहानी सुनाने पर अवश्य रखा जाता है। बच्चों के लिए कहानी सुनाते समय किन-किन बातों का ध्यान रखा जाए, कहानी कैसे सुनायी जाए, कैसा हो कक्षा का वातावरण, कहानी सुनाने से पहले और बाद में किन गतिविधियों का आयोजन किया जाए-इन सब पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान चर्चा की जाती है।

भाषा की कक्षा में कहानी का और भी कई तरीकों से उपयोग किया जा सकता है। भाषा सीखने के दौरान कई वर्ण बोलने, पढ़ने तथा लिखने में कुछ बच्चों को दिक्कत होती है जैसे – ठ,ढ,थ,फ,ड तथा ण।

इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए हाल ही में हुए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षकों से इन वर्णों को इस्तेमाल करते हुए कहानी बनवाई गई। यह प्रशिक्षण एन.सी.ई.आर.टी. के नॉर्थ ईस्ट क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलाँग द्वारा 18 मार्च से 24 मार्च 2014 तक गुवाहाटी में आयोजित किया था। इसमें नागालैंड के शिक्षकों ने भाग लिया। नागालैंड में हिंदी तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। शिक्षकों ने बताया कि यहाँ पर बच्चे घर में अपनी बोली (नागालैंड की विभिन्न बोलियाँ) बोलते हैं और अधिकांश बच्चे विद्यालय में ही हिंदी सुनते हैं। ऐसे में शिक्षकों के सामने कई वर्णों को सिखाने के दौरान काफ़ी समस्या आती है। शिक्षकों ने बताया कि हिंदी में कहानी और कविताएँ सुनने में बच्चों को आनंद आता है और वे इन्हें ध्यान से सुनते हैं। शिक्षकों से बातचीत की गई कि इन वर्णों से बने शब्दों को यदि कहानी के ताने-बाने में डालकर बच्चों को कहानी सुनायी जाए, तो कहानी सुनते-सुनते बच्चे इन कठिन से लगने वाले वर्णों को कब

*असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, उत्तर पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग, मेघालय

सरलतापूर्वक सीख जाते हैं कि उन्हें स्वयं भी नहीं आभास हो पाता है।

बच्चों को कहानी सुनाने की ज़रूरत, कहानी का चयन कैसे करें, कहानी कैसे सुनायी जाए – इन सब बातों पर विस्तार पूर्वक चर्चा करने के बाद प्रतिभागी शिक्षकों को समूह में कहानी बनाने का कार्य दिया गया। प्रत्येक समूह को एक-एक वर्ण दिया गया। इसके बाद प्रत्येक समूह ने बनी हुई कहानी प्रस्तुत की। ये कहानियाँ कैसी थीं – लीजिए आप भी पढ़िए –

पहले समूह ने 'ड' वर्ण से बने शब्दों के आधार पर कहानी बनाई –

डमरू और चिड़िया

सवेरे का समय था, ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी, पेड़ की डालियों पर चिड़ियाँ चहक रही थीं – चीं-चीं-चीं। इतने में वहाँ पर एक डमरू वाला आया। वह अपना डमरू बजाने लगा – डम-डम-डम-डम। डमरू की आवाज़ से चिड़ियाँ डर गईं। चिड़ियों का चहकना बंद हो गया और डर के मारे सारी चिड़ियाँ उड़ गईं।

दूसरे समूह को दिया गया था – ट। इस समूह द्वारा बनी कहानी –

टॉम और टम-टम

एक लड़का था। उसका नाम टॉम था। एक दिन वह टोपी पहनकर ट्यूशन पढ़ने के लिए घर से निकला। रास्ते में उसने टॉफ़ी खरीदी। उसी समय उसने एक टम-टम देखा। टमटम वाला बहुत मोटा था। उसने टम-टम वाले को रोका। उस मोटे टम-टम वाले ने टॉमी से पूछा – अरे! बेटा कहाँ जाना है? टॉमी ने टम-टम वाले से कहा-मुझे पलटन बाज़ार ट्यूशन पढ़ने जाना है। टम-टम वाला टॉम को पलटन बाज़ार ले गया। ट्यूशन से लौटते वक्त रास्ते में टॉम ने अपने पॉकेट से टॉफ़ी निकालकर खायी और टम-टम वाले को भी एक टॉफ़ी दी और फिर वह घर वापस आ गया।

तीसरे समूह ने 'ठ' वर्ण से बने शब्दों के आधार पर बनायी कहानी –

चिट्ठी वाला

एक डाकिया था। वह गली-गली चिट्ठी बाँटने जाता था। ठंड का मौसम था। ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। उसे ठंड लग रही थी। वह ठिठुर-ठिठुर कर चल रहा था। रास्ते में उसे मिठठू मिला। मिठठू मिठाई बेच रहा था। मिठठू ने डाकिए को मिठाई खाने के लिए दी। डाकिया मिठाई खाकर खुश हो गया। उसने मिट्ठू से कहा – तुम बातें भी खूब मीठी-मीठी करते हो और मिठाई भी बढ़िया बनाते हो। फिर वह चिट्ठियाँ लेकर घर-घर बाँटने चल दिया।

चौथे समूह को दिया गया था – ण। कहानी ऐसे बनी –

शिकारी का प्रण

एक शिकारी था। उसका नाम विष्णु था। एक दिन वह अपना धनुष-बाण लेकर शिकार करने निकला। जैसे ही वह जंगल पहुँचा उसे बहुत सारे जंगली जानवर दिखाई देने लगे। विष्णु ने हिरण को मारने के लिए अपने धनुष में बाण लगाया। हिरण विष्णु को देखकर अपने प्राण बचाने के

लिए वहाँ से भागा। एक क्षण के लिए उसे लगा कि वह नहीं बचेगा। भागता हुआ हिरण एक झोपड़ी के सामने पहुँचा। हिरण झोपड़ी के अंदर घुस कर छिप गया। तभी विष्णु वहाँ पहुँचा। वहाँ एक साधु बैठा हुआ था। साधु ने विष्णु को समझाया कि अपने भोजन के लिए मूक जानवरों के प्राण लेना ठीक नहीं है। सारे जीव-जंतु राष्ट्र की संपदा हैं। राष्ट्र निर्माण में हर एक नागरिक का कर्त्तव्य है कि हर क्षण अपनी संपदा की रक्षा करे। रण से हटकर शांति का अमल करे। साधु की बातें सुनकर विष्णु को लगा कि साधु सही बात कह रहे हैं। उसने अपना विचार एक ही क्षण में बदल लिया और प्रण किया कि आगे से किसी प्राणी का वध नहीं करूँगा।

पाँचवें समूह ने 'श' वर्ण से बने शब्दों को पिरोते हुए कहानी गढ़ी –

शहदवाला

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में शारदा नाम की एक लड़की थी। वह बहुत ही शांत स्वभाव की थी। उसके साथ खेलने वाले बच्चे शोभा, शीला, शशि बहुत चंचल और शरारती थे। एक दिन की बात है। एक शहद बेचने वाला गाँव में आया। बच्चे शहद बेचने वाले के पास जमा हो गए। सभी का मन शहद खाने का कर रहा था। परंतु उनके पास पैसे नहीं थे। शशि ने शहद बेचने वाले से कहा – आप हमें शहद खिला दो, हम शहद के बदले आपको कविता या शायरी सुना देंगे। शहद वाले ने शंका भरी नज़रों से बच्चों की ओर देखा और बोला – बच्चों क्या तुम जानते हो कि शायरी क्या होती है? शायद तुम्हें पता नहीं, शायरी के लिए शब्दों का मेल होना ज़रूरी है। बच्चों ने पूछा – भैया! क्या आप कविता और शायरी जानते हो? शहद बेचने वाले ने कहा – हाँ, मैं जानता हूँ। लो सुनो–

देखो-देखो मेरी शान
रखता हूँ अपना ईमान
ईमानदारी है मेरी शान
यही है मेरी पहचान

शहद वाले की शायरी सुनते-सुनते शोभा के मन में विचार आया। उसने सोचा कि इसकी शायरी की तारीफ़ कर दी जाए तो यह खुश हो जाएगा और हमें शहद खाने को दे देगा। शायरी खत्म होते ही बच्चों ने तालियाँ बजाईं और एक साथ बोल उठे – वाह भैया आप तो मीठा-मीठा शहद भी बेचते हैं और इतनी बढ़िया शायरी भी कर लेते हैं। अपनी शायरी हमें सुना भी दो और सिखा भी दो। अब भैया मीठा-मीठा शहद भी खाने को दीजिए ना!

बच्चों की मीठी-मीठी बातें सुनकर शहदवाला खुश हो गया और उसने उन्हें शहद खाने को दिया। बच्चों ने बड़े चाव से शहद खाया। जब वे शहद खाकर जाने लगे तो शकीला बोल उठी – भैया मेरी कविता सुनो –

शहद वाले प्यारे भैया
हम सब नाचें ता-ता थैया।

छठवें समूह को दिया गया था वर्ण – ढ। इससे बनी कहानी है –

ढोलवाला

एक ढोलवाला था। एक दिन वह ढोल लेकर एक गाँव में पहुँचा। वह ढोल बजाने लगा। ढम-ढम-ढम-ढम। ढोल की आवाज़ सुनते ही बच्चे दौड़कर आए। बच्चों ने ढोल वाले को चारों ओर से घेर लिया। ढोल वाले ने फ़िर से ढोल बजाना शुरू किया ढम-ढम-ढम-ढम। एक बच्चे ने ढोल वाले से पूछा – इस ढोल के अंदर क्या है। ढोल वाला बोला – ढुमुक-ढुमुक है। बच्चों ने कहा – हमें ढुमुक-ढुमुक दिखाओ न! ढोल वाले ने ढोल का ढक्कन खोला। जैसे ही ढक्कन खुला, एक बड़ा सा मेंढ़क उछल कर बाहर कूदा। मेंढ़क के बाहर निकलते ही बच्चे भी उछल गए। वे ज़ोर-ज़ोर से ताली बजाने लगे – ढोल के अंदर मेंढक, ढोल के अंदर मेंढक।

प्रस्तुतीकरण के दौरान शिक्षकों ने भी साथी शिक्षकों की बनी कहानियाँ सुनने में रुचि दिखाई। शिक्षकों का कहना था कि बच्चों को कठिन लगने वाले वर्णों को सिखाने का यह आसान तरीका है। शिक्षकों का यह भी कहना था कि जब उनसे कहानी लिखने के लिए कहा गया तो उन्हें झिझक हो रही थी क्योंकि सभी अहिंदी भाषी हैं तथा सबने पहली बार हिंदी में कुछ लिखा था। कहानी/कुछ लिखने का आनंद उन्हें पहली बार मिला।

प्रस्तुतीकरण के पश्चात् सभी शिक्षक प्रतिभागी प्रसन्न थे उनकी यह राय थी कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान इसी प्रकार से समूह कार्य दिए जाएँ तो सीखना सरल हो जाता है, प्रशिक्षण कार्यक्रम में वास्तव में कुछ सीखकर जा सकते हैं और प्रशिक्षण सार्थक हो जाता है।

प्रतिभागियों के नाम

1. आर. कुमार	2. टी.एन. पांडे
3. मेन्योलेत्यो	4. पिकातो
5. मुघावी	6. प्रकाश
7. आखोतो	8. नेल्सॅन
9. हिसिन्लो	10. वाईसुॅम्बा
11. बी. प्रसाद	12. आखुमला
13. सेद्जेलिए	14. हेलेना
15. आचुॅला	16. वेच्छ
17. हेलेन माघ	18. सिनी थोंग

जिस प्रकार हर बच्चे में कुछ न कुछ क्षमता ज़रूर होती है, बस आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक उसे पहचानकर बच्चे को कक्षा में अवसर दें। उसी प्रकार ज़रूरत इस बात की भी है कि शिक्षक स्वयं में निहित क्षमता तथा प्रतिभा को भी पहचानें और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान उसका उपयोग करें।